# साहित्य सरिता से सजग समाज

**मलगौडा पाटील**

हिंदी विभाग, के. एल. ई. बी. के. कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, चिक्कोडि।

**DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263775**

## ABSTRACT:

साहित्य और समाज के बीच में भावनात्मक संबंध है, जो मानव मन की उपज है। मानव सभ्यता का विकास नदी के दोनों तट पर दिखाई देता है, तो मानव निर्मित साहित्य का उद्गम समाज के बीच जीवन जीते हुए, जब मानव अनेक अनुभवों को प्राप्त करता है, तब होता है। मानव अपने इन अनुभवों के भावनाओं में बहने से जन्में विचारों को लिखता है, उसी को हम साहित्य कहते हैं। यही साहित्य मानव निर्मित समाज में एक क्रांति ला सकता है। साहित्य हमेशा से समाज में सदाचार को बचाए रखने का प्रयास करता हुआ आ रहा है और इस कार्य में अनेक बार सफलता को प्राप्त कर चुका है। लेकिन इस 21वीं शताब्दी में हम पाते हैं कि मानव के मन में उठने वाले दुराचार भाव इन सदाचार भावों पर हावी हो रहे हैं। इसके लिए कारण यह हो सकता है कि 21वीं शताब्दी के इंसान का साहित्य के प्रति नीरस मनोभाव। इंसान के पढ़ने की अरुचि के कारण उसके भावनात्मक स्रोत के साथ-साथ साहित्य रूपी सरिता भी प्रभावित होती जा रही है। जिस तरह से समाज में अनेक भावनाएँ प्रवाहित होती हैं, जैसे सामाजिकता, सदाचार, सद्भावना और सदुद्देश्य। इन भावनाओं को अगर बचाकर रखना चाहिए, तो साहित्य सरिता निरंतर प्रवाहित होती रहनी चाहिए। साहित्य से समरसता और क्रांति के बीज प्रस्फुटित होते हैं, जिससे सामाजिक उन्नति के साथ-साथ समाज के अंदर निहित बुराइयों को मिटाने के भाव भी होते हैं। इस लेख से हमें यह पता चलता है कि व्यक्ति के बिना समाज की कल्पना नहीं और व्यक्ति की कल्पनाओं के बिना साहित्य का सृजन नहीं, तो यहाँ पर व्यक्ति ही केंद्र है। तो इससे हमें यह ज्ञात होता है कि समाज और साहित्य का संबंध अटूट है। जब तक व्यक्ति है, तब तक समाज है और साहित्य भी। इस संबंध का आदि तो हो चुका है, लेकिन इसका अंत मानव के मन में उठने वाली भावनाएँ जब थम जाएँगी, तब इनका संबंध भी शीतल होता जाएगा।

## KEYWORDS:

सरिता, सजग, व्यष्टि, समष्टि, सामंजस्य।

**प्रस्तावना:**

साहित्य सरिता का उद्गम समाज से ही होता है और इस सरिता का मूल उद्देश्य समाज में निहित गंदगी को धोकर उसमें निर्मलता और नवीनता लाने का प्रयास है। इसी कारण से साहित्य समाज का दर्पण है। इस दर्पण में सामाजिक समरसता और नीरसता दोनों का समान रूप से चित्रण मिलता है, जिसे पढ़कर पाठक अपनी भावनाओं और विचारों से सामाजिक सामंजस्य को बनाए रखने का, उसमें शांति और समृद्धि को बढ़ाने का प्रयास करता है। अगर हम साहित्य शब्द का विवेचन करें तो हमें यह पता चलता है कि वह हमेशा सामाजिक विचारों से युक्त होता है। मानव सभ्यता का विकास जितना प्राचीन है, उतना ही साहित्य का विकास भी प्राचीन है। हम मोटे तौर पर जानते हैं कि साहित्य का सृजन वैदिक काल से प्रारंभ होकर निरंतर हर काल में अपना प्रभाव छोड़ता हुआ आ रहा है। अगर इस साहित्य को हम हिंदी भाषा के साथ जोड़कर देखते हैं, तो सर्वप्रथम आदि काल से होता हुआ भक्ति काल, रीतिकाल और आधुनिक काल के तहत सामाजिक विकास का जो क्रम है और समाज में निहित जो तत्व हैं, उनके बदलाव, विकास और सामाजिक स्थिति ऐसे अनेक विचारों को संजोए हुए चला आ रहा है। जैसे आदिकाल में ज्यादातर राजा महाराजाओं की वीरता का गुणगान मिलता है, तो भक्ति काल में आते-आते यहाँ भगवान की भक्ति को ज्यादा महत्व और लोकमंगल की भावनाओं को भी जागृत करने का प्रयास हुआ। रीतिकाल में आते ही साहित्य का ध्यान श्रृंगार और नैतिक मूल्यों से भरा पड़ा है। आधुनिक काल में साहित्य का निर्माण समाज के सभी तत्वों का रक्षण और उनकी वृद्धि के लिए ही समर्पित रहा, जिसे हम आज भी किसी न किसी साहित्यकार के साहित्य में पा सकते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि साहित्य का सृजन उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और प्राकृतिक तत्वों पर निर्भर रहता है।

साहित्य का अर्थ ही होता है सहित या साथ होना। साहित्य का यह अर्थ स्पष्ट करता है कि साहित्य मानवीय भावनाओं के सहित और समाज के साथ खड़ा रहता है।

**उद्देश्य**

1. साहित्य व्यष्टि और समष्टि के बीच एक भावनात्मक संबंध को जागृत

करता है।

2. साहित्य से कुटुम्ब, समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है।
3. साहित्य समाज के निर्माण में सहायता देने वाले सभी तत्वों का पोषक और संरक्षक है।

अगर हम व्यष्टि और समष्टि शब्दों के अर्थ पर दृष्टिपात करते हैं तो हम पाते हैं कि व्यष्टि का अर्थ – व्यक्ति अथवा "समष्टि (समाज) का सदस्य।" समष्टि का अर्थ – समाज, समवेत सत्ता या सामूहिकता। अंग्रेजी में इनका अर्थ क्रमशः person और society होता है।

मनुष्य भी एक प्राणी मात्र है। अगर मनुष्य को अन्य प्राणियों से कोई अलग करता है, तो उसकी बौद्धिकता और भावनाएँ। अगर मानव इन दोनों को गँवा बैठा तो अन्य प्राणियों में और मनुष्य प्राणी में कोई अंतर नहीं रहेगा। मानव मन में इन भावनाओं को जगाए रखने का काम साहित्य करता है, जिसे पढ़कर व्यक्ति अपने संवेदनाओं को बनाए रखता है। व्यक्ति जब अकेला रहता है तो उसे व्यष्टि कहकर संबोधित करते हैं, लेकिन अकेला इंसान अपना जीवन बसर नहीं कर सकता। इसी कारण से वह व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ मिलजुल कर अपने विचारों और भावनाओं से मिलकर व्यष्टि से समष्टि का निर्माण कर लेता है। समाज में समरसता बनाए रखने और समाज के आंतरिक और बाह्य उन्नति और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए साहित्य की जरूरत होती है। हम मानव सभ्यता के विकास को जब देखते हैं तो उस सभ्यता के साथ-साथ साहित्य का भी विकास क्रम हम देख सकते हैं। साहित्य और समाज का एक अटूट बंधन है जो कभी टूट नहीं सकता, क्योंकि समाज मनुष्य से बनता है और साहित्य की रचना मानव भावनाओं से होती है। यहाँ पर हम पाते हैं कि इन दोनों के बीच की अमूल्य कड़ी मनुष्य है, तो मनुष्य के बिना समाज की कल्पना शून्य है और साहित्य का भी।

अगर हमें व्यष्टि और समष्टि के गहराई तक जाना है, तो हिंदी के श्रेष्ठ रचनाकार अज्ञेय की बातों पर विचार करना अनिवार्य है। अज्ञेय जी अपने एक साक्षात्कार में कहते हैं कि "मनुष्य मूल्यों की सृष्टि करता है। सिर्फ पहचानता नहीं है कि मूल्य है, वह रचता है उन मूल्यों को। निरंतर उसके मूल्य भी विकसित होते जाते हैं। एक मूल्य के बदले वह उस बड़े

या व्यापक या ज्यादा बड़े समाज के लिए कल्याणकारी मूल्य की अवधारणा करता है। यही उसकी उन्नति है, यही उसकी शक्ति है कि वह मूल्यों की अवधारणा करता है और इतने बड़े मूल्य बनाता है कि उसके सामने स्वयं अपने को छोटा करता है।"1 मूल्यों के मंथन के इस युग में हम पाते हैं कि मूल्यों का निर्माण हो रहा है। इसी प्रकार होता रहा तो साहित्य और समाज के बीच जो गहरा संबंध है, वह और भी गहरा होता जाएगा। 21वीं सदी में हम पाते हैं कि मानव विकास तो हो रहा है लेकिन मूल्यों का पतन हो रहा है। यह न व्यक्ति के लिए अपितु समाज के लिए भी श्रेयस्कर नहीं है। इन मूल्यों के पतन के साथ-साथ सामाजिकता की अवनति है। जब मनुष्य साहित्य में निहित मूल्यों को छोड़ता है, तो वह समाज हित में नहीं होता बल्कि व्यक्तिगत हित में होता है। जब यही मूल्य व्यक्तिगत हित में होते हैं तो वह स्वार्थ बनता है और स्वार्थ ही समाज के पतन के लिए कारणीभूत बनता है। अगर हम अज्ञेय की बातों पर अमल करेंगे तो मूल्य ही सर्वश्रेष्ठ है, यानी समाज ही सर्वश्रेष्ठ। व्यक्ति उस समाज का एक अमूल्य अंग मात्र बनकर रहे तो समाज की उन्नति हो सकती है।

बचपन से ही हम अनेक कथाएं सुनते आए हैं जिन में यह बताया गया है कि एकता ही शक्ति और विघटन ही विनाश के लिए कारणीभूत है। जैसे मुझे एक कहानी याद आती है जिसमें एक व्यक्ति अपने तीन बच्चों को एक-एक लकड़ी तोड़ने को देता है, तो वह बच्चे बहुत ही सरलता से उन लकड़ियों को तोड़ देते हैं। लेकिन जब 8-10 लकड़ियाँ एक साथ उन बच्चों के हाथ में दे देता है, तो उन लकड़ियों को तोड़ने में बच्चों को बहुत ही कठिनाई होती है। इसी प्रकार बहुत कृतियों का निर्माण किया गया जिनका मूल उद्देश्य ही व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण ही प्रमुख रहा है।

**"हमको इस जगत का ध्यान नहीं**
**कुछ मान नहीं अपमान नहीं**
**हम दीवानों की दुनिया में**
**कुछ भले बुरे का ज्ञान नहीं**
**हम भेदभाव मय जगती के सब भेद**
**मिटाने वाले हैं**
**हम बड़े विकट मतवाले हैं।"2**

यहाँ पर हम पाते हैं कि कवि अपने इन पंक्तियों में कहते हैं कि मानव मन में उठने वाले भेदभाव ही कुटुंब हो या फिर समाज में विघटन पैदा करते हैं। अगर हम इन भावनाओं को दबाकर रखेंगे तो समाज और कुटुंब में समरसता बनी रहेगी। यही समरसता समाज के लिए श्रेयस्कर है।

मुख्य रूप से हम पाते हैं कि समाज पाँच तत्वों से जुड़ा हुआ होता है। वे हैं सामाजिकता, धार्मिकता, संस्कृति, प्रकृति और राजनीति। इन पाँच तत्वों से मिलकर बने समाज रूपी विटप को पल्लवित और प्रफुल्लित करने के लिए साहित्य सरिता की आवश्यकता है। पाँच तत्व समाज के लिए पूरक माने जाते हैं। जब कभी इनमें कुछ विसंगतियाँ घटित होती हैं, तो वह समाज के लिए हानिकारक माना गया है। इसी को समान रूप से बाँधकर रखने का प्रयास साहित्य करता हुआ आया है। साहित्य हमेशा इन तत्वों के क्रमिक और निरंतर विकास की चर्चा करते हुए आया है, जैसे अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक हडसन जी का यह कथन – "साहित्य युग युगांतरों से किसी भी समाज के मन और चरित्र के क्रमिक विकास का चित्रण है।"3

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तो समाज और मानव के लिए प्रकृति की आवश्यकता बहुत ही अमूल्य है। इस तत्व के बारे में मानव मन में भावनाओं को जागृत करने का काम साहित्यकारों ने किया है।

**"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास**
**कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास**
**कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त**
**कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त"4**

नागार्जुन जी की यह कविता यह स्पष्ट करती है कि प्रकृति में जब भी कोई विपदा सामने आती है, तो उससे न सिर्फ मानव समाज अपितु प्रकृति के हर जीव जंतु को उसका प्रकोप झेलना पड़ता है। जब इंसान इन समस्याओं से जूझने से अपने आप को असमर्थ पाता है तो उसकी मदद के लिए इंसान ने स्वयं एक प्रणाली का निर्माण किया है उसे ही सरकार कहा जाता है, जिसे इंसान की सहायता करना आवश्यक होता है। जिसे हम संवैधानिक भाषा में सांसद भी कहते हैं। इस संसद पर हुकूमत तो इंसान का रहता है लेकिन कुछ नेता लोग अपनी इंसानियत को ही भूल बैठे हैं। अपनी इस गद्दी को बचाए रखने के लिए वह किसी भी हद तक

जा सकता है। इसी का जीता जागता उदाहरण धूमिल अपनी कविता में स्पष्ट करते हैं।

**"एक आदमी**
**रोटी बेलता है**
**एक आदमी रोटी खाता है**
**एक तीसरा आदमी भी है**
**जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है**

**वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है**
**मैं पूछता हूँ-**
**'यह तीसरा आदमी कौन है?**
**मेरे देश की संसद मौन है। 5"**

मूल्यों से बने इस समाज में राजनीति का हाहाकार है। जैसे हमने ऊपर चर्चा की थी, मानव मूल्यों को बनाता है और उन मूल्यों के अनुसार ही चलता है। उसके लिए मूल्य ही सर्वोपरि होना चाहिए, लेकिन जब इंसान अपने मूल्यों को भूलकर अपने आप को महान गिनता है, तो वह एक हीन प्रवृत्ति को अपनाता है और यही हीन प्रवृत्ति समाज और इंसानियत के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। यहाँ पर धूमिल भी इसी की चर्चा करते हैं कि एक इंसान रोटी बनाता है, दूसरा इंसान रोटी खाता है, तो तीसरा एक ऐसा इंसान है, जो मूल्यों से शून्य है। वह न रोटी बना सकता है और न रोटी खा सकता है, सिर्फ उस रोटी से खेलता है। ऐसे इंसान समाज से खिलवाड़ करते हैं, जो इंसान और इंसानियत के लिए हानिकारक है। इस प्रकार के अनेक मूल्यों को बताकर हिंदी साहित्य समाज के साथ अपना गहरा संबंध स्थापित कर उसे बनाए रखना चाहता है, लेकिन आधुनिकता की दौर में इन मूल्यों के प्रति इंसान ज्यादा सजग दिखाई नहीं दे रहा है।

**निष्कर्ष:**

साहित्य और समाज का संबंध तब से है, जब से मानव समाज में जीने लगा और अपने भावनाओं को लिखकर साहित्य का सृजन करने लगा। इससे स्पष्ट है कि साहित्य और समाज का एक अटूट संबंध है, जो हमेशा मानवीय भावनाओं से जुड़े रहते हैं। मानव समाज में जीते हुए

अनेक नियम और तत्वों को बनाकर जीने लगा। इनमें जब भी कोई त्रुटि होती है, तो उससे समाज को बचाने के लिए साहित्य का सृजन करने लगा। साहित्य समाज निर्माण के पाँच तत्वों को लेकर बहने वाला एक पंचनद है, जो समाज को एकरूपता और सुंदरता को बढ़ाता ही नहीं, उसे बचाकर भी रखने का निरंतर प्रयास करता रहता है, क्योंकि साहित्य मानव मन की भावना है, तो समाज मानव समूह का एक गुच्छ है।

## आकर ग्रंथ:

1. कृष्णदत्त पालीवाल, अज्ञेय से साक्षात्कार 2012. पृ. 215
2. 'मुझको ना सुख संसार दो' कवि शिवमंगल सिंह सुमन. हिंदी के प्रगतिशील और समकालीन कविता डॉ. रंजीत – पृ. 166
3. H. Hudson, an introduction to the study of literature पृ. 37
4. 'नागार्जुन रचना संचयन' नागार्जुन प्रकाशन साहित्य अकादेमी 2017 पृ. 100
5. 'कल सुनना मुझे' धूमिल, वाणी प्रकाशन 1999. पृ. 66

**Funding:**
This study was not funded by any grant.

**Conflict of interest:**

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

**About the License:**

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.